मुकुन्द लाठ

संगीत, नृत्त, नाट्य पर
विमर्श-लेख संग्रह

संगीत और संस्कृति

विभिन्न कलाओं में गहरी अभिरुचि रखने वाले सुपरिचित संगीत पारखी और चिंतक मुकुंद लाठ की यह पुस्तक कई अर्थों में महत्त्वपूर्ण और अनूठी है। वह इसमें संकलित लेखों में संगीत-नृत-नाट्य को बृहत्तर संदर्भों में रखकर देखते-परखते हैं, और संस्कृति मात्र का एक गहरा बोध कराते हैं—कुछ इस तरह कि इस 'बोध' में संगीत और अन्य कलाओं के कई मर्म दीप्त हो उठते हैं। वह भारतीय संगीत को भारत की शिल्प परम्पराओं से जोड़कर भी देखते हैं, और चित्रकृतियों तथा मूर्तिशिल्पों के साक्ष्य से संगीत-जगत की बारीकियों में उतरते हैं। ठोस प्रमाणों और भावभरी कल्पनाओं के जरिये वह जो भी विमर्श बुनते हैं, उसमें एक सच्चे रसज्ञ की रचनात्मक ऊर्जा निहित है। उनका गद्य सहज प्रवाही है, और शैलीकर ढंग से सम्प्रेषणीय है।

लेख बहुविध विषयों पर हैं, लेकिन वह एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। कारण यही कि लेखक के जो सरोकार हैं, वे मूलत: कलाओं की निर्मिति और उनसे प्राप्त होने वाले उन मानवीय अनुभवों से संबंध रखते हैं, जिन्हें कलाओं से ही प्राप्त किया जा सकता है। कला-साहित्य की परंपराओं में मुकुंद जी की गहरी पैठ है और कई विधाओं तथा रचना विधियों के इतिहास में भी उनकी दिलचस्पी है। रागों के इतिहास के माध्यम से वह जो राग-विमर्श, एक अनुराग के साथ बुनते हैं, वह इसी का प्रमाण है।

वह परम्पराओं के समक्ष प्राय: कुछ नए और मौलिक प्रश्न रखते हैं, और आधुनिकता को भी नए प्रश्नों और संस्कृति की कसौटी पर कसते हैं। शाङ्गदेव के *संगीतरत्नाकर* से संबंधित उनका लेख हो, या ध्रुपद पर उनका चिंतन, या पंडित जसराज से उनकी बातचीत हो, सबमें उनकी अध्ययनशील, मननशील और एक तात्त्विक-दार्शनिक दृष्टि को भी हम सक्रिय पाते हैं। 'ताल और तबला' जैसे लेख में, तथा अन्य लेखों में भी वह निरा औपचारिक-सैद्धांतिक शैली से हटकर, संवाद की जो कहन-शैली अपनाते हैं, उसमें मिठास है, अपनापन है, और एक ऐसा विमर्श-सुख है जो उलझन भरे और जटिल प्रश्नों को भी अपने ढंग से सुझलाती चलती है। और इसमें भला क्या संदेह कि पाठक इस विचार-यात्रा में विमर्शों का एक सहयात्री बनकर उनका पूरा आनंद उठा सकेगा।

1937 में कोलकाता में जन्मे मुकुंद लाठ की संगीत में विशेष प्रवृत्ति थी जो बनी रही है। आप पंडित जसराज के शिष्य हैं। लेखन का आरंभ संगीत के प्राचीन ग्रंथ *दत्तिलम्* के अनुवाद और विवेचन से हुआ। लेखों के प्रस्तुत संग्रह से पहले इन्हीं विषयों पर अंग्रेजी लेख-संग्रह *ट्रान्सफ़ॉरमेशन ऐज क्रिएशन* (1998) छपा है। *संगीत एवं चिंतन* (1994; 2006) में संगीत को चिंतन का आधार बनाने का एक विलक्षण प्रयास है। वीनांत कालवार्त के साथ लिखी गई *दि हिंदी पदावली ऑफ़ नामदेव* (1989) में हिंदी संत साहित्य के उपलब्ध स्वरूप और संरक्षण में संगीत की भूमिका पर अनूठा प्रकाश है। चिंतन-दर्शन के क्षेत्र में *धर्म-संकट, कर्म-चेतना के आयाम, क्या है क्या नहीं है* उल्लेखनीय हैं। आपने कवि बनारसीदास की आत्मकथा का *अर्ध-कथानक : हॉफ़ ए टेल* के नाम से अनुवाद और विवेचन किया है। कविता भी करते रहे हैं। अभी हाल ही में *अनरहनी रहने दो* (2012) के नाम से कविता-संग्रह छपा है। आप संगीत नाटक अकादेमी के फ़ेलो चुने गये हैं (2011); इसी अकादेमी का विशेष पुरस्कार (2008), शंकर पुरस्कार (2000), नरेश मेहता वाङ्मय पुरस्कार (2003), और पद्मश्री (2010) पा चुके हैं।